खेती - भारत की संस्कृति

उत्तर में हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर भारत के बीच में पड़ने वाली पठार से गुजरते हुए, दक्षिण के सुंदर खेतों तक। राजस्थान की रेगिस्तान से लेकर सूरज की पहली दर्शन मिलने वाली अरुणाचल प्रदेश तक पाया जाता है पूरे भारत में विविधता में एकता। भारत प्राचीन काल से विभिन्न प्रकार के सभ्यता के साथ-साथ, खेती, खाना, पीना, सजावट, भाषा, धर्म, पहनावा आदि को छाया दे रहा है।

संस्कृति: ज़्यादा तर लोगों की भाषा, पहनावा, खाना, पीना, सजावट आदि को दर्शाने वाले एक शब्द है 'संस्कृति'। भारत के हरेक राज्य या इलाकों में भी पायी जानी वाली संस्कृति अलग-अलग है। मानव जब से इस पृथ्वी पर आया है, तब से लेकर इस क्षण तक खाना

उसके जीवन का अविभाजित हिस्सा बना रहा है। खाने के लिए ही किया गया था नए-नए हथियारों का और तरीकों का आविष्कार। आज के इस वर्तमान युग में जब हरेक व्यक्ति तकनीकी का इस्तमाल करे जा रहा है - तब भी खेती और मनुष्य के बीच का रिश्ता बना रहा है।

प्राचीन समय या शिलायुगों में मानव ने जंगल से जंगली उत्पन्नों को इखट्ठा करके और जानवरों को मारकर अपने अस्तित्व को इस पृथ्वी पर बनाए रखा। नए-नए हथियारों का खोज भी इसी वक्त में हुआ। लेकिन उसके बाद लोगों ने नदियों के किनारे एक झुंड के रूप में रहना शुरु किया और हुई खोज खेती की। मानव जनता नेविभिन्न प्रकार के फसलों को उगाना शुरु किया। विभिन्न प्रकार के धान्य, चावल, गेहूँ आदि की फसल पहले केवल मानव को खाने के उपयोग में ही

आता था। लेकिन फिर वह उद्योग का एक तरीका बना।

अंग्रेज़ों के समय में भारत के लोग विभिन्न प्रकार के फसल उगाते है। गंगा-ब्रह्मापुत्र के तट पर ही बसी हुई भारत के कुछ पहली सभ्यताएँ। गोरों से पहले लोग केवल अपने आप के लिए या पड़ोसियों के लिए खेती करते थे। लेकिन गोरों का आगमन और ज़मीन में से ~~मिलने~~ वाली किराई बढ़ती रही। गोरों ~~के~~ लोगों के फसलों को कम दाम दिये। लोगों से उन्होंने ज़मीन भी छीन लिए। इन सबके कारण लोगों ~~की~~ का मन रब्बर, कॉफी, इंडिगो जैसे उत्पन्नों को उगाने में लगा। लेकिन वहाँ भी उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ा। भारत ~~के~~ को स्वतंत्रता मिलने के बाद तब के प्रधान मंत्री पंडित जवहरलाल नेहरू का मानना था कि भारत ~~खून और~~ की खेती में आने वाला बदलाव ही उसे

आत्मनिर्भर बनाएगा।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत में विकास लाने के लिए पाँच वर्षीय विकास आयोजना शुरू की गयी। पहले के पाँच वर्ष में सबसे ज्यादा महत्व खेती को दी गई। खेती एक ऐसा इलाका है जिसकी उन्नति एक देश विकासशील से विकसित राज्य का दर्जा दिया जा सकता है।

खेती को दो विभागों में विभजित किया जा सकता है —

खेती खाने के लिए : चावल, गेहूं, बाजरा, दाल आदि की खेती लोगों को खाने के लिए ही दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों का पेट भरना है।

खेती उद्योग के रूप में : रबर, कॉफी, आदि

फसलों की खेती पैसा कमाने के लिए होती है। इन चीजों की खेती का मुख्य उद्देश्य पैसा है।

भारत की संस्कृति खेती से पुराने समय से जुड़ा हुआ है। भारत में मौसम और जगहों ~~भूमोल~~ के अनुसार फसलों में बदलाव आता है। उत्तर में ज्यादातर गेहू उगाया जाता है तो दक्षिण में चावल। पंजाब में सरसों को उगाया जाता है तो असम में चाय पत्ती। भारत में मौसम, मिट्टी, बारिश की मात्रा, और भौगोलिक विभिनता के अनुसार फसलों को चुना जाता है।

संस्कृति और खाना जैसे आपस में जुड़े हुए है ठीक उसी प्रकार खेती और भारत की संस्कृति जुड़ी हुई है। लेकिन क्या आज के वर्तमान युग में हम खेती को हमारे संस्कृति का भाग कहला सकेंगे?

आज के वर्तमान युग में खेती को जो स्थान दिया जा रहा है वह बहुत छोटा है। आजके युवा खेती के इलाकों में क्या चल रहा है इसके बारे में तक नहीं जानते। इनके हिसाब से खेती एक पेसा काम बन गया है जो मिट्टी पर उतरकर, बिना कोई फायदे के करना पड़ता है। केरल की स्थिति खेती को लेकर बहुत बुरी बन चुकी है। केरल को आज तमिल नाडु जैसे राज्यों पर निर्भर करना पड़ रहा है फल सब्जियों के लिए।

युवाओं की हिस्सेदारी खेती में कम क्यों हो रहा है?

खेती से मिलनी वाली फायदा : खेती एक पेसा इलाका है जिसका उपयोग जल्दी अमीर बनने के लिए नहीं किया जा सकता। खेतों में कमरतोड़ मेहनत करने के बाद भी किसानों को मिलने वाली रकम उनके परिवार वालों के लिए काफी नहीं होगा। आजके युवा जल्द ही जल्द

पैसा बनाने के पीछे दौड़ रहा है। और इसलिए हमारे समाज में ज्यादा तर लोग विदेश जाना चाहते हैं।

किसानों की समस्या

सिंचाई की कमी : किसानों की समस्या में से एक है सिंचाई करने के संविधान में होने वाली कमी। सूखा खेत हमेशा से किसानों के लिए एक डरावना सपना रहा है। जवाहरलाल नेहरू जी भारत की सबसे पहली डाम भाक्रानंगल की शुरुआत में सिंचाई को ही सबसे महत्व दिया था।

बढ़ती महंगाई : आजकल साधनों की महंगाई बढ़ती ही जा रही है जैसे कि खाद और कीड़नाशक। खाद - एक किसान के संबंध में सबसे ज़रूरी चीज़ों में से एक है। लेकिन बढ़ती महंगाई और कम फायदे ने किसानों को परेशान कर रखा है।

फायदा : बाजार में साधनों की रकम बढ़ रही है लेकिन किसानों को मिलने वाली फायदा बहुत ही ज्यादा कम है। किसानों को अकसर बड़ा-बड़ा कर्ज उठाना पड़ता अपने परिवारवालों की पढ़ाई के लिए। बच्चों को पढ़ाने के लिए उठाने वाले कर्ज कभी-कभी इतना बड़ा हो जाता है कि उसे चुकाना नामुमकिन बन जाता है। भारत में अभी भी मौजूद किसानों की आत्महत्या का मुख्य कारण भी यही है।

सूखा और बाढ़ : आज कल मौसम में लगातार बदलाव आता जा रहा है। बाढ़ और सूखा मौसम में आने वाले बदलाव के कारण ही हो रहा है। भूमंडलीय उष्मीकरण और सैलाब जो नष्ट किसानों को देता है वह बहुत ही बड़ा होता है। कुटनाड जैसे इलाको में किसानों की सबसे बड़ी समस्या बाढ़ ही है। फसल नष्ट होजाता है और उनकी परेशानी बढ़ जाती है।

खेती = एक मौसमीय उद्योग : खेती एक ऐसा उद्योग है जो साल भर नहीं किया जा सकता है। खेती, फसल के हिसाब से कोई प्रत्येक महीनों में ही किया जा सकता है। सभी, इसके कारण साल में कुछ समय ही खेती किया जा सकता है।

"जिसने दी पूरी सभ्यता को खाना
वही अन्नदाता आज खेती को
लेकर है विवश।"

वर्तमान युग में खेती में पड़ने वाली कमी एक देश की विकास को रोक सकता है। आज भारत की आर्थिक स्थिति में सबसे ज्यादा भूमिका खेती निभाती है। आत्मनिर्भर भारत का सपना बिना खेती संपूर्ण होना मुश्किल है। आर्थिक व्यवस्थिति में या देश के जी. डी. पी में खेती बहुत ही बड़ी भूमिका निभाती है।

मानव की संस्कृति में पहले, खेती महत्वपूर्ण रहा है। लेकिन आज वह कम हो रहा है।

क्या किया जा सकता है खेती को वापस लाने के लिए –

बच्चों को खेती के महत्व के बारे में समझाना

उत्पन्नों की रकम बढ़ाना

सरकार द्वारा सींचाई और खाद की उपलब्धि पहुँचाना।

घर में सब्जियाँ उगाना।

अगर खेती नहीं तो मानव भी नहीं।

"खेती भारत का महत्वपूर्ण हिस्सा।"